International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(II), January - March, 2023, pp. 39-41

किशोर विद्यार्थियों का समायोजन एवं आकांक्षा स्तर

अबिता कुमारी*
डॉ. पूजा बेनीवाल**

प्रस्तावना

किशोरावस्था जो हमारे वर्तमान समय की शक्ति और भविष्य की आशा होते है का विकास एक निरन्तर चलने वाले प्रक्रिया है। यह विकास की प्रक्रिया विभिन्न चरणों से होते हुए अंतिम रूप से अपने मूल स्वरूप को प्राप्त करती है। शिक्षा शास्त्रीयों के अनुसार बालक बाल विकास गर्भावस्था से लेकर जीवन पर पर्याप्त चलता रहता है। प्रत्येक अवस्था अपने आगे आने वाली अवस्थाओं की नींव होती है। यह अवस्थाए – 1. गर्भावस्था – यह जीवन निर्माण की अवस्था होती है। 2. शैशवावस्था – यह जगह से 5 या 6 वर्ष की आयु तक होती है। यह अवस्था बालक का निर्माण काल काल है। इस अवस्था में बालक का जितना अधिक निरीक्षण और निर्देशन किया जाता है। उतना ही उत्तम उसका विकास और भावी जीवन होता है। 3. बाल्यावस्था – बाल्यावस्था वास्तव में जीवन का स्वर्णिम समय होती है, क्योंकि इसी अवसथा में बालक का सर्वाग्रींण विकास हेता है। बालक विकास की गति प्रदान करने के साथ साथ एक साथ परिपक्व व्यक्तित्व के निमण की ओर अग्रसर हेाता है। 4. किशोरावस्था – यह बाल काल की अंतिम अवस्था होती है। बाल विकास की प्रक्रिया में किशोरावस्था का महत्वपूर्ण स्थान है। इस अवस्था को बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के मध्य का संधिकाल कहते है। किशोरावस्था जीवन का वह समय है जहाँ से अपरिपक्व व्यक्ति का शारीरिक व मानसिक विकास अपने चरम सीमा की ओर अग्रसर होता है। किशोरावस्था 13 वर्ष से 19 वर्ष तक मानी जाती है। किशोरावस्था जीवन की सुनहरी अवस्था समझी जाती है। किशोरावस्था इष्टतम विकास और बाल्यावस्था में हुए विकास के सफलतापूर्वक होने पर निर्भर करता है। इस काल में बाल्यावस्था की स्थिरता और शांति नहीं दिखाई पड़ती है।

किशोर बालक और बालिका में बहुत अधिक शारीरिक और मानसिक परिवर्तन होते है। जिससे उनके संवेगात्मक और नैतिक जीवन का स्वरूप ही बदल जाता है। उनके हृदय स्पूर्ति और जोश से भर जाते है और संसार का प्रत्येक वस्तु मे उन्हें एक नया अर्थ दिखाई पडने लगता है। ऐसा प्रतीत होता है किशोरावस्था में प्रविष्ट हाोकर बालक एक नया जीवन ग्रहण करता है। किशोरावस्था में अक्सर किशोर किशोरी उंची उंची आकांक्षाएं एवं कल्पनाएं करता है। जिनका वास्तविक से कोई सरोकार नहीं होता है। वह अपने विषय में और दूसरों के विषय में वैसा ही सोचते है जैसा कि सोचना पंसद करते है ना कि जैसी वास्तविकता होती हैं एवं उच्च आकांक्षाओं से किशोरों में संवेगात्मक स्थिरता भी उत्पन्न हो जाती है। विद्वान रशियन ने अपने द्वारा किए अध्ययनों के आधार पर बताया कि किशोरों में जितनी अधिक आवश्यकता एवं उच्च कक्षाएं होती है। उतनी हीं उनमें अधिक कुंठा तथा क्रोध विशेषकर उस परिस्थिति में अधिक होती है जब वे यह समझते है कि वे उस लक्ष्य पर नहीं पहुंच पाए जिस पर पहुंचना चाहते थे।

* शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** सहायक आचार्य, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जामडोली, जयपुर, राजस्थान।

किशोर किशोरी अपनी समकक्ष परिस्थितियों में एवं अपने समूह एवं परिवार में श्रेष्ठ प्रदर्शन एवं मान सम्मान प्राप्त करने की प्रबल आकांक्षा से ग्रसित होते है। उसी अवस्था में भी भविष्य से सम्बन्धित अपने लक्ष्य निर्धारित करतें है और उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहते है। किशोर विद्यार्थियों में कुछ बनने की प्रबल इच्छा होती है। इसके लिए भी अपने कर्तव्यों का पालन करता है। विद्यार्थियों को अपनी योग्यता क्षमता एवं रूचि के अनुसार पाठ्यक्रमों का चुनाव कर भविष्य हेतु तैयारी करता है। इसी के अनुरूप उनके अध्ययन सम्बन्धी आदतें विकसित होती है। किशोरावस्था में किशोरों की व्यक्तित्व की स्थिति स्पष्ट होती है। और उन्हें स्वयं ही अपने द्वारा की जाने वाली सामाजिक भूमिका के बारे में संभ्रांत होती है। सचमुच एक किशोर अपने आपको न तो बच्चा समझता है और ना हीं पूर्ण व्यस्त इसका नतीजा यह होता है कि किशोरों में स्वयं के द्वारा की जाने वाली व्यक्ति की भूमिका के बार में संभ्रात ही मौजूद रहती है। एरिक्सन ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि इस विशिष्टता का किशोर स्पष्टीकरण चाहते है कि वह कौन है उसकी समाज में भूमिका क्या होगी वह बच्चा है या व्यस्क है।

उपरोक्त सभी उन में होने वाले शारीरिक मानसिक संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास के परिणाम स्वरूप घटित होता है। किशोरावस्था में शारीरिक विकास के अन्तर्गत बालक बालिका के भार, लम्बाई में वृद्धि अस्थियों का विकास सिर तथा मस्तिष्क का विकास, इन्द्रियों का विकास, आवाज में परिवर्तन, लैंगिक ग्रन्थों का विकास, पाचन तंत्र का विकास, विभ्झिनन ग्रन्थितयों का प्रभाव आदि परिवर्तन होते है। इस अवस्था के अंत तक बालक का अधिकतम मानसिक विकास हो जाता तथा आगे के जीवन में इन क्षमताओं का मात्र सुदृढिकरण होता है। किशोर किशोरी में मानसिक विकास के अन्तर्गत चिंतन शक्ति का विकास, एकाग्रता, नैतिकता की समझ, बुद्धि का अधिकतम विकास, तर्क शक्ति का विकास, समस्या समाधान शक्ति का विकास, निर्णय शक्ति एवं स्मृति का विकास आदि परिवर्तन होते है। किशोरावस्था में बालक बालिकाओं में सांवैगिक विकास भी तीव्रता से होता है जिसके कारण उनके अनेक संवेगात्मक परिवर्तन दिखाई देते है जैसे आत्मसम्मान के प्रति सचेत, जिज्ञासा प्रवृति की प्रबलता, संवेगों की अभिव्यक्ति में स्थिरता, क्रियाशीलता एवं सक्रियता, काल्पनिक जीवन पर विश्वास इत्यादि उपरोक्त सभी परिवर्तनों के फलस्वरूप किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में भी परितर्वन इस अवस्था में दिखा देते है। क्योंकि व्यक्तित्व व्यक्ति के शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक गुणों का समुच्चय है।

किशोरावस्था में किशोर किशोरियों का सामाजिक विकास भी होता है। सामाजिक विकास से तात्पर्य अपने समाज का जीवन शैली को सीखने और अपने समाज में समायोजन करने से होता है। बालक जिस समाज के बीच जन्म लेता है और जिस समाज के बीच रहता है उसे समाज की भाषा रहन सहन एवं खानपान की विधियों रीति–रिवाजों और आचरण की विधियों को सीखना होता है बिना इनकों सीखे वह उस समाज में समायोजन नहीं कर सकता है। मनोवैज्ञानिक ने लम्बे अध्ययनों के बाद पाया कि मनुष्य का सामाजिक विकास उसके शारीरिक मानसिक और संवेगात्मक विकास पर निर्भर करता है। किशोरावस्था में किशोरों का सामाजिक परिवेश अत्यंत विस्तृत होता है। शारीरिक, मानसिक तथा समय का आत्मक परिवर्तनों के साथ साथ उसमे सामाजिक व्यवहार में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक है। किशोरावस्था में होने वाले अनुभव तथा बदलते सामाजिक सम्बन्धों के फलस्वरूप किशोर किशोरियों नए ढंग से सामाजिक वातावरण में समायेाजन करने का प्रयास करते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, अरूण कुमार "उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान" मोतीलाल बनारसीदास बेंगलुरू, रोड़ दिल्ली, 2002.
2. सिंह, अरूण कुमार एवं सिंह, आशीष कुमार "आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान" मोतीलाल बनारसीदास, बेंगलुरू रोड़, दिल्ली,2002.
3. सिंह, अरूण कुमार एवं सिंह, आशीष कुमार "व्यक्तित्व का मनोविज्ञान" मोतिलाल बनारसीदास बेंगलुरू रोड़, दिल्ली. 2002
4. सुलेमान, मोहम्मद एवं चौधरी, विनय कुमार "आधुनिक औद्योगिक एवं संगठनात्मक मनोविज्ञान", मोतीलाल बनारसीदास बेंगलुरू रोड़ दिल्ली, 2002
5. पांडे, रामशकल "शिक्षा मनोविज्ञान" आर लाल बुक डिपो, मेरठ, 2008.

6. सारस्वत, मालती "शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा", आलोक प्रकाशन, लखनऊ, 2007.

7. चौधरी, अजय कुमार एवं पूरी, प्रेरणा एवं शर्मा, तरूण कुमार एवं जोशी, हेमलता "मनोविज्ञान" माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर.

8. कुमार, मुनि धर्मेश "व्यक्तित्व विकास" जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनू, राजस्थान 2013.

9. मंगल. एस.के. एवं मंगल शुभा "व्यवहारिक विज्ञान में अनुसंधान विधियां" लर्निंग प्राईवेट लिमिटेड, दिल्ली 2014.

10. शर्मा, ममता एमएमसी है आरती "सामान्य मनोविज्ञान" पुस्तक के खंड 3 विकासात्मक प्रक्रियाएँ, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, फरवरी 2020.

11. अस्थाना, विपिन "शिक्षा मनोविज्ञान" पुस्तक मंदिर आगरा–2007

❖◆❖